चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Tribune	08-07-24	02	3-4

The Tribune
VOICE OF THE PEOPLE

Varsities to research effects of climate change on drumstick

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, JULY 7

Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU), Hisar, and Massey University, New Zealand, will jointly conduct research on the impact of climate change on drumstick.

Vice-Chancellor Professor BR Kamboj said today that the research would be conducted on the effects of climate change on the tannins and antioxidant properties in the seeds and leaves of the drumstick plant.

For this, samples of the plant will be collected from the Himalayan as well as southern regions of the country.

Two teams have been formed by the HAU for the research. Dr Jayanti Tokas, Dr Akshay Bhukar, Dr Craig McGill and Dr Penny Back have been included in the team.

The leaves of drumstick are a great source of protein and also contain important amino acids. Its leaves are mainly rich in nutrients such as calcium, potassium, phosphorus, iron and vitamins A, D and C. The plant's leaves are used to boost energy levels and also in the treatment of various diseases, including diabetes and ailments affecting the immune system, bones and liver.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	07-07-24	03	6-8

हकृवि व न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी मोरिंगा पर करेंगे शोध

हिसार, 6 जुलाई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और मैसी यूनिवर्सिटी, न्यूजीलैंड के शोधार्थी एवं शिक्षक मोरिंगा (ड्रमस्टिक) पर मौसम में हो रहे बदलाव की वजह से पड़ने वाले प्रभाव पर संयुक्त रूप से रिसर्च का कार्य करेंगे।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने प्रोजैक्ट के बारे में बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिंन और एंटीओक्सीडैंट प्रोपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। रिसर्च के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'स्पार्क' परियोजना को वित्तीय सहायता की स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है।

उन्होंने बताया कि इसके लिए हिमालय रीजन, उतराखंड व दक्षिणी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों से मौरिंगा के सैंपल लिए जाएंगे। शोध के लिए हकृवि द्वारा दो टीमों का गठन किया गया है, जिसमें विश्वविद्यालय की ओर से पी.आई. डा. जयंती टोकस व को-पी.आई. डा. अक्षय भूकर, न्यूजीलैंड विश्वविद्यालय की ओर से

कुलपति प्रो. बी.आर. के साथ मोरिंगा पर रिसर्च करने वाली टीम के सदस्य व अन्य अधिकारीगण.

टीम में पी.आई. डा. क्रैग मैकगिल और को-पी.आई. डा. पैनी बैक को शामिल किया गया है।

डा. जयंती टोकस ने बताया कि मोरिंगा पर शोध के लिए विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के दो शोधार्थी मैसी यूनिवर्सिटी, न्यूजीलैंड का दौरा करेंगे। मोरिंगा को लेकर हकृवि में अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की जाएगी। इस कार्यशाला में दोनो विश्वविद्यालयों की टीमें संयुक्त रूप से भाग लेंगी।

मोरिंगा जिसे सहजन भी कहा जाता है। मोरिंगा की पत्तियां प्रोटीन का एक बड़ा स्त्रोत है और इसमें सभी महत्वपूर्ण एमीनों एसिड भी होते हैं। इसकी पत्तियां मुख्य रूप से कैल्शियम, पोटेशियम, फॉस्फोरस, आयरन और विटामिन ए, डी, सी से भरपूर होती हैं। मोरिंगा की पत्तियां शरीर में ऊर्जा बढ़ाने के साथ-साथ डायबिटीज, इम्यून सिस्टम, हड्डियों और लीवर सहित विभिन्न बीमारियों के इलाज में इस्तेमाल की जाती हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	07-07-24	02	1-2

एचएयू और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी सहजन पर करेंगे शोध

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) और मैसी यूनिवर्सिटी, न्यूजीलैंड के शोधार्थी एवं शिक्षक मौसम में हो रहे बदलाव की वजह से मोरिंगा (सहजन) पर पड़ने वाले प्रभाव पर संयुक्त रूप से शोध कार्य करेंगे।

एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने इस प्रोजेक्ट की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज व पत्तियों में टैनिन और एंटीऑक्सीडेंट प्रॉपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर शोध किया जाएगा। इसके लिए केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय से 'स्पार्क' परियोजना को वित्तीय सहायता की स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है।

उन्होंने बताया कि इसके लिए उत्तराखंड समेत हिमालय और दक्षिणी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों से सहजन के नमूने लिए जाएंगे। शोध के लिए एचएयू ने दो टीमों का गठन किया है। इसमें एचएयू ने डॉ. जयंती टोकस को पीआई और डॉ. अक्षय भूकर को कोपीआई बनाया है जबकि न्यूजीलैंड विश्वविद्यालय की टीम में डॉ. क्रैग मैक गिल पीआई और डॉ. पैनी बैक कोपीआई होंगे।

शोध के लिए एचएयू ने दो टीमों का गठन किया

डॉ. जयंती ने बताया कि सहजन पर शोध के लिए एचएयू के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के दो शोधार्थी मैसी यूनिवर्सिटी, न्यूजीलैंड का दौरा करेंगे। सहजन के लिए एचएयू में अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की जाएगी। इसमें दोनों विश्वविद्यालयों की टीमें संयुक्त रूप से भाग लेंगी। सहजन की पत्तियां प्रोटीन का बड़ा स्रोत हैं। इसमें सभी महत्वपूर्ण एमीनो एसिड भी होते हैं।

इसकी पत्तियां मुख्य रूप से कैल्शियम, पोटेशियम, फॉस्फोरस, आयरन और विटामिन ए, डी, सी से भरपूर होती हैं। सहजन की पत्तियां शरीर में ऊर्जा बढ़ाने के साथ डायबिटीज, इम्यून सिस्टम, हड्डियों व लिवर सहित विभिन्न बीमारियों के इलाज में इस्तेमाल की जाती हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	07-07-24	04	7-8

हकृवि और न्यूजीलैंड के शोधार्थी करेंगे मौसम बदलाव पर शोध

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और मैसी यूनिवर्सिटी, न्यूजीलैंड के शोधार्थी एवं शिक्षक मोरिंगा पर ड्रमस्टिक मौसम में हो रहे बदलाव की वजह से पड़ने वाले प्रभाव पर संयुक्त रूप से रिसर्च का कार्य करेंगे। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने प्रोजेक्ट के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिंन और एंटीओक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पडने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। रिसर्च के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'स्पार्क' परियोजना को वित्तीय सहायता की स्वीकृति प्रदान की जा चकी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	06-07-24	03	1-2

एग्री बिजनेस इन्क्यूबेशन सेंटर

एबिक से शुरू कर सकते हैं स्टार्टअप, ₹4 से 25 लाख मिलेगा अनुदान

केंद्रीय कृषि एवं कृषि कल्याण मंत्रालय की ओर से कृषि से संबंधित व्यापार करने के लिए 4 से 25 लाख रुपए तक का अनुदान मिलता है। इसके लिए सिर्फ एक आइडिया देना होगा। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में स्थापित एग्री बिजनेस इन्क्यूबेशन सेंटर (एबिक) के जरिए कृषि से संबंधित बिजनेस करने के लिए 25 लाख रुपए तक अनुदान मिलेगा। एबिक सेंटर के माध्यम से युवा छात्र, किसान, महिला व उद्यमी मार्केटिंग, नेटवर्किंग, लाइसेंसिंग व पेटेंट, तकनीकी प्रशिक्षण लेकर कृषि क्षेत्र में स्टार्टअप शुरू कर सकते हैं। इसके लिए छात्र कल्याण प्रोग्राम, 'पहल' एवं 'सफल'-2024 नाम से 3 प्रोग्राम हैं। छात्र कल्याण प्रोग्राम के तहत चयनित छात्र को 1 महीने का प्रशिक्षण व 4 लाख रुपए तक की अनुदान राशि, पहल प्रोग्राम के तहत 1 महीने का प्रशिक्षण व 5 लाख तक की अनुदान राशि और सफल प्रोग्राम के तहत 1 महीने का प्रशिक्षण व 25 लाख तक की अनुदान मिलेगी। इच्छुक व्यक्ति को विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.hau.ac.in पर 10 सितंबर तक ऑनलाइन आवेदन करना है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	06.07.2024	---	--

हकृवि व न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी मोरिंगा पर करेंगे शोध

पल पल न्यूज: हिसार, 6 जुलाई। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और मैसी यूनिवर्सिटी, न्यूजीलैंड के शोधार्थी एवं शिक्षक मोरिंगा (ड्रमस्टिक) पर मौसम में हो रहे बदलाव की वजह से पड़ने वाले प्रभाव पर संयुक्त रूप से रिसर्च का कार्य करेंगे। विश्व विद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने प्रोजेक्ट के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिंन और एंटीओक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। रिसर्च के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'स्पार्क' परियोजना को वित्तीय सहायता की स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है। उन्होंने बताया कि इसके लिए हिमालय रीजन, उत्तराखंड व दक्षिणी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों से मौरिंगा के सैंपल लिए जाएंगे। शोध के लिए हकृवि द्वारा दो टीमों का गठन किया गया है। जिसमें विश्वविद्यालय की ओर से पीआई डॉ. जयंती टोकस व को-पीआई डॉ. अक्षय भूकर, न्यूजीलैंड विश्वविद्यालय की ओर से टीम में पीआई डॉ. क्रैग मैक गिल और को-पीआई डॉ. पैनी बैक को शामिल किया गया है। डॉ. जयंती टोकस ने बताया कि मोरिंगा पर शोध के लिए विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के दो शोधार्थी मैसी यूनिवर्सिटी, न्यूजीलैंड का दौरा करेंगे। मोरिंगा को लेकर हकृवि में अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की जाएगी। इस कार्यशाला में दोनो विश्वविद्यालयों की टीमें संयुक्त रूप से भाग लेंगी। मोरिंगा जिसे सहजन भी कहा जाता है। मोरिंगा की पत्तियां प्रोटीन का एक बड़ा स्त्रोत है और इसमें सभी महत्वपूर्ण एमीनों एसिड भी होते हैं। इसकी पत्तियां मुख्य रूप से कैल्शियम, पोटेशियम, फॉस्फोरस, आयरन और विटामिन ए,डी,सी से भरपूर होती हैं। मोरिंगा की पत्तियां शरीर में ऊर्जा बढ़ाने के साथ-साथ डायबिटीज, इम्यून सिस्टम, हड्डियों और लीवर सहित विभिन्न बीमारियों के इलाज में इस्तेमाल की जाती हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	06.07.2024	---	--

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी मोरिंगा पर करेंगे शोध

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और मैसी यूनिवर्सिटी, न्यूजीलैंड के शोधार्थी एवं शिक्षक मोरिंगा (ड्रमस्टिक) पर मौसम में हो रहे बदलाव की वजह से पड़ने वाले प्रभाव पर संयुक्त रूप से रिसर्च का कार्य करेंगे।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने प्रोजेक्ट के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिन और एंटीऑक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। रिसर्च के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'स्मार्क' परियोजना को वित्तीय सहायता की स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है।

उन्होंने बताया कि इसके लिए हिमालय रेंज, उत्तराखंड व दक्षिणी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों से मोरिंगा के सैंपल लिए जाएंगे। शोध के लिए हकृवि द्वारा दो टीमों का गठन किया गया है। जिसमें विश्वविद्यालय की ओर से पीआई डॉ. जयंती टोकस व को-पीआई डॉ. अक्षय भूकर, न्यूजीलैंड विश्वविद्यालय की ओर से टीम में पीआई डॉ. क्रेग मैक गिल और को-पीआई डॉ. पैनी चैक को शामिल किया गया है।

कुलपति प्रो. बी.आर. के साथ मोरिंगा पर रिसर्च करने वाली टीम के सदस्य व अन्य अधिकारीगण।

डॉ. जयंती टोकस ने बताया कि मोरिंगा पर शोध के लिए विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के दो शोधार्थी मैसी यूनिवर्सिटी, न्यूजीलैंड का दौरा करेंगे। मोरिंगा को लेकर हकृवि में अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की जाएगी। इस कार्यशाला में दोनों विश्वविद्यालयों की टीमें संयुक्त रूप से भाग लेंगी।

मोरिंगा जिसे सहजन भी कहा जाता है। मोरिंगा की पत्तियां प्रोटीन का एक बड़ा स्त्रोत है और इसमें सभी महत्वपूर्ण एमीनो एसिड भी होते है। इसकी पत्तियां मुख्य रूप से कैल्शियम, पोटेशियम, फॉस्फोरस, आयरन और विटामिन ए,डी,सी से भरपूर होती है। मोरिंगा की पत्तियां शरीर में ऊर्जा बढ़ाने के साथ-साथ डायबिटीज, इम्यून सिस्टम, हड्डियों और लीवर सहित विभिन्न बीमारियों के इलाज में इस्तेमाल की जाती है।